A.B paper-VIII

B.A. III Hons
Paper VIII (Ancient history (AI&A))

Page-1

यौधेयों के सिक्के (Coins of Yaudheya)

प्राचीन भारतीय सिक्कों में स्थानीय और गणजातियों के सिक्कों का अपना अलग महत्व है। स्थानीय गणजातियों और गणराज्यों के सिक्कों में यौधेय गणराज्य के सिक्के प्रचलित हुए।

प्रयाग प्रशस्ति में गणराज्यों की तालिका मिलती है। इसमें यौधेय गणराज्य भी एक है गणराज्य उत्तरी पश्चिमी भारत में था। जूनागढ़ अभिलेख में इसकी गणना वीर जातियों के रूप में की गयी है अभिलेख 150 ई० का है, क्योंकि यही रुद्रदामन का समय था। यौधेयों ने आर्जुनायन तथा कुणिन्दों के साथ मिलकर कुषाणों का अन्त करने के लिए एक संघ का निर्माण किया था।

ऐसी संभावना है कि कुषाणों के समय इन्होंने उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों को छोड़कर राजपूताना में अपना अधिकार किया हो। इस तथ्य का ज्ञान कुषाण सिक्कों से होता है क्योंकि कुषाणों के सिक्के यमुना तथा सतलज के बीच के स्थानों में मिलते हैं। अन्तिम कुषाणों के सिक्के यहाँ न मिलकर यौधेयों के सिक्के मिलते हैं।

यौधेयों के सिक्के के ऊपर :—

1. कार्तिकेय की आकृति।
2. इन पर द्वि या त्रि शब्द अंकित है।

अल्तेकर का मत है कि "द्वि" अथवा "त्रि" दो या तीन गणराज्यों के संघों का द्योतक है। इन्होंने कुषाणों के खिलाफ मिलकर लड़ने के लिए संघ बनाया था इनका अस्तित्व ईसा से 500 वर्ष पूर्व ज्ञात होता है। इनका उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी किया गया है। इन्हें उसमें आयुधजीवी संघ बताया गया है। मौर्य काल में ये मौर्यों के अधीन थे। आगे चलकर इनकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित हुई। इन लोगों के अनेक सिक्के तांबे मिले हैं। इन सिक्कों पर —

"यौधेय गणस्य जयः" या यौधेयानां बहुधान्यकानां" अंकित है। अल्तेकर का कहना है कि महाभारत का "मत्तमयूरक" जो कि रोहतक के रहने वाले थे; आगे चलकर "यौधेय" कहे गये। ये लोग ~~बहावल~~ बहावलपुर राज्य के पड़ोसी थे। भरतपुर की यौधेयों का एक लेख मिला है, इस अभिलेख में यौधेयों के अधिपति को —

"महाराज महा सेनापति"

उपाधि से सम्बोधित किया गया है। इस प्रकार इनकी स्थिति

Scanned with CamScanner

Page (2)

सतलज नदी के किनारे भरतपुर के आस-पास में थी। राजस्थान के गोविन्दगढ़वार राजपूत सम्भवतः उन्हीं के वंशज हैं।

यौधेयों के सिक्के का विस्तार :→

यौधेयों के सिक्के निम्नलिखित-स्थानों से उपलब्ध हैं :→

1. सतलज और यमुना नदी के घेरे में
   क. रोहतक प्रदेश
   ख. पंजाब आदि
2. देहरादून।
3. लुधियाना।
4. दिल्ली 5. गढ़वाल 6. कांगड़ा आदि स्थानों से।

सिक्कों की धातु :→

1. अधिकांश ताम्बे के और
2. कुछ चाँदी के मिले हैं।

कालक्रम की दृष्टिकोण से सिक्का विभाजन निम्नप्रकार से किया जाता है :-

1. नन्दि और हाथी प्रकार
2. कार्तिकेय के साथ "ब्राह्मण्यदेव" ~~और~~ "कुमार" अंकित सिक्का
3. " " "ब्राह्मणदेव" और 'द्रम' अंकित सिक्का
4. कुषाणों की नकल पर बने सिक्के।

इन सिक्कों में पहला सिक्का प्रथम काल का है, दूसरा ~~सिक्का~~ तथा तीसरा दूसरे काल के हैं। चौथे तीसरे काल का है। इसका विस्तृत उल्लेख इस प्रकार है :-

(1) नन्दि और हाथी प्रकार का यौधेय सिक्का → इस सिक्के की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

धातु - ताम्र का
निर्माण तिथि - 200 ई०पू०
लिपि - ब्राह्मी

अंकन - अग्रभाग पर नन्दि के सम्मुख स्तम्भ की आकृति पर "यौधेयानां बहुधान्यकानां" अंकित है किसी-किसी सिक्के के ऊपर "यौधेयानां-भूमि" भी अंकित मिलता है।

सिक्के के पृष्ठ भाग पर हाथी-नन्दि पद का चिह्न है लेकिन कोई लेख अंकित नहीं है।

(2) कार्तिकेय के साथ "ब्रह्मण्यदेव" अंकित सिक्का → इस प्रकार के सिक्कों के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है यह चाँदी और ताम्बे धातुओं का मिश्रण है। इसका समय प्रथम शताब्दी

ई० पू० है। सिक्के के अग्रभाग पर कमल के फूल के ऊपर कार्तिकेय का अंकन किया गया है। यह ब्राह्मी लिपि में "यौधेयाना" भगवत स्वामी ब्राह्मण्यस्य" अंकित है।

3. कार्तिकेय के साथ ब्राह्मण्यदेव तथा पुत्र अंकित सिक्के:→

यह सिक्का पूर्व सिक्कों की भांति है। अन्तर इतना ही है कि- इस सिक्के पर "ब्राह्मण्यदेवस्य पुत्र" अंकित है।

4. कुषाण अनुकरण पर निर्मित सिक्के:→

यह सिक्का सतलज और यमुना नदी के बीच के भागों से अधिक संख्या में पायी गयी है। इस सिक्का का लेख ब्राह्मी लिपि में "यौधेय गणस्य जय: अथवा यौधेयानां गणस्य जय:" अंकित है तथा ये चौथी शताब्दी का है।

सिक्के के अग्रभाग पर "राजा हाथ में त्रिशूल लिए अंकित है तथा कहीं-कहीं कार्तिकेय की आकृति बनी है तथा बायीं ओर मोर अंकित है।

पृष्ठभाग पर भी अग्रभाग के समान है जिस प्रकार की कुषाण सिक्कों के ऊपर सूर्य का आकृति है। ऐसा प्रतीत होता है कि- इन सिक्कों का निर्माण कुषाण विजय के उपलक्ष में किया गया था।

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Shershah College Sasaram
Deptt of AI&AS